विचार बिन्दु

हम यहाँ किसी विशेष कारण से हैं। इसीलिए अपने भूत का कैदी बनना छोड़िये। अपने भविष्य के निर्माता बनिए। –रोबिन शर्मा

कहीं विनाश का कारण ना बन जाएं हीट रिस्क का फैलाव

जलवायु परिवर्तन की दुष्वारियों में से एक देश और दुनिया के देशों में हीट रिस्क के व्यापक प्रभाव से आसानी से समझा जा सकता है। यदि हम भारत की ही बात करें तो 2011 से 2022 के दशक के अध्ययन के अनुसार देश में हीट रिस्क का दायरा बहुत अधिक बढ़ गया है। मजे की बात यह है कि अब दिन की तुलना में रातें भी अधिक गर्म होने लगी है। इसका एक बड़ा कारण आज की भवन निर्माण विधि और शहरों में कंक्रिट का जंगल विकसित होना और अन्य के साथ ही इलेक्ट्रोनिक उत्पाद खासतौर से अत्यधिक उर्जा खपत वाले फ्रीज और कुलर की जगह लेते एयरकण्डीशनर भी एक है। घटते जंगल और आबादी का दबाव भी एक बड़ा कारण है। उर्जा के रुप में जो संसाधान उपयोग किये जा रहे है वे भी जलवायु परिवर्तन का प्रमुख कारक बन रहे हैं। काउंसिल ऑन एनर्जी, एनवायरमेंट एण्ड वॉटर सीईईडब्ल्यू की हालिया रिपोर्ट अत्यधिक चिंतनीय और हालात की गंभीरता को दर्शाती है। रिपोर्ट की माने तो देश की तीन चौथाई आबादी आज हीट रिस्क की जद में आ चुकी है। देश के 734 जिलों में से 417 जिले तो अत्यधिक जोखिम वाले जिलों में शुमार हो चुके हैं। कम जोखिम वाले जिलों में तो केवल और केवल 116 जिले ही रह गये हैं। हालात की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि वैसे तो हीट रिस्क के दायरें में नोर्थ ईस्ट और उत्तरी भारत के नाममात्र के क्षेत्र को छोड़ दिया जाये तो समूचा देश आज हीट रिस्क के दायरें में आ चुका है। देश के 10 जिले राजस्थान, दिल्ली, आन्ध्र प्रदेश, केरल, गोवा, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, तमिलनाडू और उत्तरप्रदेश हीट रिस्क की अत्यधिक जद में आये प्रदेश व क्रेन्दशासित राज्य है।

ऐसा नहीं है कि हमारे देश में ही हीट रिस्क का दायरा बढ़ रहा है। अपितु अब यह वैश्विक समस्या हो चुकी है। दुनिया के देशों में तापमान में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। तेज गर्मी की तपन से हालात दिन-प्रतिदिन बिगड़ते जा रहे हैं। जंगलों में दावानल और बैमौसम आंदि तूफान, सूखा या बाढ़ ऐसी समस्यायें आने लगी है जिससे साल दर साल अब अधिक दो-चार होना पड़ रहा है। अमेरिका का फर्नेस क्रीक सबसे अधिक गर्म स्थान है तो ट्यूनिशिया का केबिली, कुवैत का मित्रिबाह, ईरान का अहबाज और लुट रेगिस्तान, चीन का फ्लेमिंग आदि स्थान ऐसे है जो सर्वाधिक गर्मी वाले स्थान है। इसके साथ ही मौसम के मिजाज में भी बदलाव आया है। सर्दी में गर्मी और गर्मी में सर्द रात जैसे व असमय आंधी बरसात आम होती जा रही है। गर्मी के दिन बढ़े है। फरवरी तक अब अपनी परंपरागत मौसम का दायरा छोड़ते हुए अत्यधिक गर्मी वाले महीनों में से एक होने लगा है। आखिर यह मौसम का बदलाव भावी संकट की ओर साफ-साफ इशारा कर रहा है। समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है। ग्लेशियर तेजी से पिघलने लगे हैं। समुद्र किनारे के शहरों के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया है। अब डूबने का डर सताने लगा है। अमेरिका ही नहीं दुनिया के अन्य देशों के जंगलों में जिस तेजी से आग की घटनाएं बढ़ रही है वह अपने आप में अलग चुनौती होती जा रही है। बीमारियों का असर बढ़ रहा है। हालात गंभीर होते जा रहे हैं।

आखिर यह मौसम का बदलाव भावी संकट की ओर साफ-साफ इशारा कर रहा है। समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है। ग्लेशियर तेजी से पिघलने लगे हैं। समुद्र किनारे के शहरों के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया है। अब डूबने का डर सताने लगा है। अमेरिका ही नहीं दुनिया के अन्य देशों के जंगलों में जिस तेजी से आग की घटनाएं बढ़ रही है वह अपने आप में अलग चुनौती होती जा रही है। बीमारियों का असर बढ़ रहा है। हालात गंभीर होते जा रहे हैं।

हीट रिस्क के बढ़ते दायरे को देखते हुए आज हीट एक्शन प्लान बनाये जाने लगे हैं। हांलाकि कि यदि केवल सामान्य नागरिकों के बढ़ती गर्मी के कारण होने वाले प्रभाव पर ही बात की जाए तो गर्मी बीमारियों का प्रमुख कारण बनती जा रही है। कई मिलियन मौतों का कारण हीट वेव है। निर्जलीकरण तो एक प्रमुख कारण है ही इसके साथ ही कार्डियोरेस्पिरेटरी के मामलें आम होते जा रहे हैं। अनिद्रात, तनाव, श्वासं लेने में परेशानी, दस्त, पेट दर्द, फूड पोइजनिंग और तापघात आदि बीमारियों का प्रकोप लूताप के कारण दुनिया के देशों में बढ़ता जा रहा है। जिस तेजी से हीट रिस्क का विस्तार होता जा रहा है उससे आने वाले समय में और अधिक गंभीर हालातों का सामना करना पड़ेगा। किसी समय भारतीय परंपरा के अनुसार नौतपा ऐसा समय होता था जब सबसे अधिक गर्मी पड़ती थी। यह भी माना जाता था कि जितना अधिक नौतपा प्रभावी रहेगा उतना ही अच्छी बरसात होगी। पर आजकल यह सारे कंसेप्ट बेमानी होते जा रहे हैं नौतपा के पहले ही इतना तप चुका होता है कि एक-एक दिन निकालना भारी हो जाता है। इसके साथ ही कही ना कही गर्मी मौत का या विनाश का कारण ना बने इसके बारे में वैज्ञानिकों को गंभीर मंथन करना होगा। जिस तरह से आज हमारे घर ही तापमान की बढ़ोतरी का कारण बनते जा रहे हैं उसका कोई ना कोई पर्यावरण सहयोगी साधन खोजने होंगे। पहले मकानों में चूने का उपयोग होता था तो दीपावली पर कली भी चूने की होती थी पर आज सारे हालात बदल गए हैं। एक तो गगनचुंबी इमारते और फिर उसका निर्माण लोहे सीमेंट से और इसके साथ ही दैनिक उपयोग के तापमान बढ़ाने वाले सामानों, उपकरणों के उपयोग के चलते बढ़ते तापमान को नियंत्रित करने की बात करने का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। ऐसें में गर्मी के कारण चौराहों पर हरी पट्टी तान देने या सड़कों पर पानी का छिड़काव करना कोई समाधान नहीं हो सकता बल्कि वैज्ञानिकों और नीति नियंताओं को गंभीर चिंतन करते हुए समय रहते हुए तापमान की बढ़ोतरी के कारकों को नियंत्रित करने के उपायों पर ठोस प्रयास करना होगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

"सेना का शौर्य : कालिख पुती ज़ुबां पर सुप्रीम हथोड़ा"

राजेन्द्र मोहन शर्मा

सत्ता के गलियारों में विराजमान धुरंधरों की बहकती ज़ुबान मर्यादाओं को तार-तार कर रही है, समाज की संवेदनाओं को रौंद रही है, और राष्ट्र की एकता को छलनी कर रही है। मध्यप्रदेश के सियासी मंच से लेकर पहलगाम की पवित्र वादियों तक, भाषा के अनियंत्रित तूफानों ने देश के मन को झकझोर दिया है। पहलगाम की पवित्र धरती पर नरपिशाचों ने बेटियों के जीवन और सम्मान को रौंदा था। भारतीय सेना की अधिकारी, कर्नल सोफिया कुरैशी, जिन्होंने ऑपरेशन सिंदूर का नेतृत्व कर राष्ट्र को गौरवान्वित किया, उनकी गरिमा पर मध्यप्रदेश के जनजातीय कार्य मंत्री कुंवर विजय शाह की ज़ुबान ने काला प्रहार कर सेना के शौर्य को चुनौती दे डाली। 12 मई 2025 को इंदौर के महू विधानसभा क्षेत्र के रायकुंडा गांव में एक हलमा कार्यक्रम में शाह ने कहा– जिन लोगों ने हमारी बेटियों का सिंदूर उजाड़ा, उन कटे-पिटे लोगों को हमने उनकी बहन को उन्हीं के सामने भेजकर उनकी ऐसी-तैसी करवाई। उन्होंने हिंदुओं को कपड़े उतार-उतारकर मारा, और मोदी जी ने उनके समाज की बेटी को भेजा कि तुमने हमारी बहन को विधवा किया, तो तुम्हारे समाज की बहन तुम्हें नंगा करके छोड़ेगी। यह बयान, जो पाकिस्तानी आतंकियों के संदर्भ में था, कर्नल सोफिया को अप्रत्यक्ष रूप से आतंकवादियों की बहन कहकर उनकी धार्मिक पहचान से जोड़ने का घृणित अपराध किया।

यह टिप्पणी न केवल आपत्तिजनक और साम्प्रदायिक थी, बल्कि सेना की मर्यादा और नारी सम्मान पर भी चोट थी।

इसका वीडियो वायरल होने पर देशभर में आक्रोश फैला, और मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने स्वत: संज्ञान लेते हुए चार घंटे में दर्ज करने का आदेश दिया। इस बयान ने सेना के मनोबल को भी ठेस पहुंचाई है। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता की खुशी धुंधली पड़ गई। सैन्य संगठनों ने इसे सेना की गरिमा पर हमला करार दिया, और शत्रु देशों को भारत की आंतरिक एकता पर सवाल उठाने का स्वर्णिम अवसर मिल गया। सत्ता का अहंकार 2024 में शाजापुर में देखा था। एक ड्राइवर और कलेक्टर के बीच संवाद ने सत्ता और समाज की खाई को उजागर किया था। ड्राइवर ने कहा, अच्छे से बोलिए। कलेक्टर का जवाब मिला, तुम्हारी औकात क्या है? ड्राइवर का प्रत्युत्तर था– यही तो लड़ाई है, कि हमारी कोई औकात नहीं है–समाज के दर्द की चीख थी इस वाकये में इसका वीडियो वायरल हुआ, और सामाजिक अशांति फैली। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कलेक्टर को हटा दिया, किंतु विजय शाह के बयान पर सत्ता का मौन सवाल उठाता है। क्या अनुशासन का डंडा केवल नौकरशाही पर बरसता है? मौन का अपराध काफी घना रहा है। महाभारत में द्रौपदी का चीरहरण देख भीष्म, द्रोण, और धृतराष्ट्र का मौन अपराधी था। आज, जब कर्नल सोफिया पर ज़ुबानी तलवारें चलीं, भाजपा का शीर्ष नेतृत्व चुप्पी साधे रहा।

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने रीवा में इस मुद्दे पर सवाल पूछे जाने पर कहा, छोड़ो-छोड़ो, हो गया हो गया। किंतु पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती ने शाह की निंदा की और उन्हें बर्खास्त करने की मांग की। कांग्रेस ने इस मौके को लपक लिया। राजभवन के सामने धरने, पुतला दहन, और सोशल मीडिया पर हंगामा शुरू हुआ। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने प्रधानमंत्री से शाह को बर्खास्त करने की मांग की। सियासत का यह रंगमंच हर पल नया दृश्य रचता है, किंतु इसकी कीमत क्या है? राष्ट्र की एकता और सेना की गरिमा क्या सियासी खेल की बलि चढ़ेंगी। ज़ुबान के ओछेपन ने अतीत में भी राष्ट्र को गहरे घाव दिए। मध्यप्रदेश का ताज़ा वाकया सामने है जो सीधे सेना की प्रतिष्ठा पर प्रहार है। मध्यप्रदेश के उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा का बयान–पूरा देश और देश की सेना प्रधानमंत्री के चरणों में नतमस्तक हैने अकूत विवाद खड़ा कर दिया। सेना, जो ऑपरेशन सिंदूर की सफलता से राष्ट्र को गौरवान्वित कर चुकी है, उसकी गरिमा को सियासी बयानों का मोहरा बनाना कहां तक उचित है सर सोचने वाली बात है। यह बयान सेना के स्वाभिमान पर चोट करता है और राष्ट्रवाद की भावना को कमज़ोर करता है। सियासत की विषैली गलियों में कांग्रेस ने शाह के बयान को सेना और नारी शक्ति के अपमान का मुद्दा बनाया। विपक्ष के नेता उमंग सिंघार ने कहा, सेना का कोई धर्म नहीं होता, उसका केवल एक धर्म है–देश। किंतु कांग्रेस ने भी ऑपरेशन सिंदूर के दौरान सैन्य गोपनीयता को खतरे में डालने वाले सवाल उठाए, जैसे कितने विमान गंवाए गए? ऐसे बयानों ने शत्रु देशों को भारत की रणनीति पर सवाल उठाने का अवसर दिया। किसी शायर ने ठीक कहा:–

यार सियासत की गलियों में मत जाना,
नागिन अपने बच्चों को पहले खा जाती है।

सियासत की यह गली इतनी विषैली है कि यहां मर्यादा और राष्ट्रहित की कोई कीमत नहीं। सामाजिक और वैश्विक क्षति साफ दिखाई दे रही है। ज़ुबान की यह आंधी सियासी गलियारों तक सीमित नहीं। सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो, चौराहों पर पुतला दहन, और कोर्ट-कचहरी का दौर उस सामाजिक अशांति की गूंज है, जो अनियंत्रित भाषा से पैदा होती है। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने शाह की टिप्पणी को गटरछाप और कैंसरयुक्त करार दिया, और कहा कि यह व्यक्तिगत मानहानि ही नहीं, बल्कि सामाजिक ताने-बाने पर चोट है। वैश्विक स्तर पर, इस बयान ने भारत की छवि को धूमिल किया। अंतरराष्ट्रीय मीडिया ने इसे भारत में महिलाओं और सेना के प्रति अपमान के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे भारत की लोकतांत्रिक छवि को ठेस पहुंची है। हाईकोर्ट के आदेश पर इंदौर के मानपुर थाने में शाह के खिलाफ गैर-जमानती धाराओं में FIR दर्ज हुई, जिसमें उम्रकैद तक की सजा हो सकती है। किंतु 36 घंटे बाद भी शाह की गिरफ्तारी नहीं हुई, और FIR में उनके नाम के आगे श्री लिखकर सम्मान दिया गया। सुप्रीम कोर्ट ने शाह को फटकार लगाई, और उनकी FIR रद्द करने की याचिका खारिज कर दी। भाजपा ने शाह को मुख्यालय तलब किया, और उन्होंने माफी मांगी, यह कहते हुए कि वे कर्नल सोफिया का अपनी बहन से भी अधिक सम्मान करते हैं। किंतु सवाल यह है: क्या माफी से घाव भर जाएंगे? ज़ुबान की आंधी ने राष्ट्र की खुशियों को धुआं-धुआं कर दिया। यह आंधी तभी शांत होगी, जब सत्ता और समाज अपनी ज़िम्मेदारी समझें। नेताओं को ज़ुबान पर लगाम लगानी होगी। भाषा को सेवा का साधन बनाना होगा, न कि सत्ता का शस्त्र। विपक्ष को भी रचनात्मक भूमिका निभानी होगी। सियासी रोटियां सेंकने के बजाय, उसे राष्ट्र की एकता और सेना की गरिमा को मजबूत करना होगा। समाज को सोशल मीडिया पर नफरत के बजाय सकारात्मक संवाद को बढ़ावा देना होगा। एक उम्मीद ज़ुबान की आंधी ने हमें कड़वा सबक दिया है–भाषा वह शक्ति है, जो राष्ट्र को जोड़ भी सकती है और तोड़ भी सकती है। यह समय है कि हम इस आंधी से सबक लें और मर्यादाओं की बहाली करें। किसी शायर ने कहा है:–

दिए बुझाती आंधी शोलों को भड़काती है,
आंधी को भी दुनिया-दारी आती है।

ज़ुबान को ज़हर नहीं, अमृत बनाएं। राष्ट्र की एकता और सेना की गरिमा को सलाम करें। क्योंकि अगर आज हम चुप रहे, तो कल इतिहास हमें माफ नहीं करेगा। इस बीच विजय शाह का माफीनामा सुप्रीम कोर्ट ने ठुकरा दिया है। अब शुरू होगा असली हिसाब-किताब! जी हां मध्य प्रदेश के आदिवासी कल्याण और वन मंत्री विजय शाह, जिन्हें अपनी जुबान पर लगाम लगाने की कला शायद कभी सीखी ही नहीं, अब सुप्रीम कोर्ट के रडार पर हैं। कर्नल सोफिया कुरैशी पर उनकी अभद्र और विवादित टिप्पणी ने न सिर्फ देश को शर्मसार किया, बल्कि उनकी कुर्सी को भी डगमगाने का पूरा इंतजाम कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने, जो इस बार किसी माफी के मूड में नहीं दिखा, शाह का माफीनामा ठुकराते हुए साफ कह दिया: "हमें माफीनामा नहीं चाहिए, अंजाम भुगतने को तैयार रहो!" और जब कोर्ट इस लहजे में बोलता है, तो समझ लीजिए कि अब खेल सीरियस होने की कगार पर है। शाह ने सोचा होगा कि माफी का एक वीडियो डालकर, दो-चार बार 'सॉरी' बोलकर और थोड़ा ड्रामाई अंदाज में हाथ जोड़कर मामला ठंडा हो जाएगा। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने उनके इस ड्रामे को 'नौटंकी' करार देते हुए साफ कर दिया कि माफी तब मांगी जाती है, जब दिल से पछतावा हो, न कि तब, जब कोर्ट की डंडा सिर पर लटक रहा हो। कोर्ट ने तो यहां तक कहा कि शाह का बयान देश के लिए शर्मिंदगी का सबब है। और सचमुच, एक मंत्री, जो आदिवासी कल्याण और वन जैसे संवेदनशील विभागों का जिम्मा संभालता हो, अगर ऐसी 'गटर की भाषा' (जैसा हाईकोर्ट ने कहा) बोले, तो उसे कुर्सी पर बने रहने का हक कितना बाकी रह जाता है? सुप्रीम कोर्ट ने मध्य प्रदेश सरकार को भी कठघरे में खड़ा कर दिया। नोटिस जारी कर पूछा गया कि अब तक इस मामले में क्या कार्रवाई हुई? क्या सरकार सो रही है, या फिर अपने 'बड़बोले' मंत्री को बचाने की जुगत में लगी है? कोर्ट ने अब गठन का आदेश भी दे दिया, जिसमें तीन ध्झए अधिकारी होंगे, वो भी राज्य के बाहर के। यानी, अब कोई 'अंदर की सेटिंग' काम नहीं आएगी। इन अफसरों को साफ निर्देश है इस मामले की तह तक जाओ और सच सामने लाओ।

–राजेंद्र मोहन शर्मा,
वरिष्ठ साहित्यकार, शिक्षाविद,
और चिंतक

डमी स्कूल – प्रभावशाली या औपचारिक शिक्षा के लिए हानिकारक?

अशोक कुमार

'डमी स्कूल' एक ऐसा मॉडल है जहां छात्र किसी स्कूल में केवल नाम के लिए दाखिला लेते हैं, लेकिन वे नियमित रूप से स्कूल नहीं जाते हैं। इसके बजाय, वे प्रतियोगी परीक्षाओं (जैसे JEE, NEET) की तैयारी के लिए कोचिंग सेंटरों में अधिक समय बिताते हैं।

डमी स्कूलों की प्रथा, विशेष रूप से भारत में, एक जटिल मुद्दा है जिसके अपने फायदे और नुकसान हैं। जबकि कुछ लोग इसे प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के लिए एक आवश्यक कदम मानते हैं, वहीं कई शिक्षा विशेषज्ञ और बोर्ड इसे औपचारिक शिक्षा प्रणाली के लिए हानिकारक मानते हैं।

नकारात्मक प्रभाव:–

समग्र विकास में बाधा: औपचारिक स्कूली शिक्षा केवल अकादमिक ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं है। यह छात्रों के सामाजिक कौशल, आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, सांस्कृतिक गतिविधियों में भागीदारी और व्यक्तित्व विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। डमी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्र इन महत्वपूर्ण अनुभवों से वंचित रह जाते हैं, जिससे उनका समग्र विकास प्रभावित होता है।

सामाजिक अलगाव: डमी स्कूलों में नियमित उपस्थिति न होने से छात्रों की सामाजिक अंत:क्रिया कम हो जाती है। वे साथियों, शिक्षकों और स्कूल के वातावरण से दूर रहते हैं, जिससे उनमें सामाजिक कौशल की कमी आ सकती है और अकेलापन महसूस हो सकता है।

आधारभूत ज्ञान की कमी: कई मामलों में, डमी स्कूलों में केवल परीक्षा-उन्मुख पढ़ाई पर ध्यान दिया जाता है, जिससे छात्रों के आधारभूत ज्ञान और अवधारणाओं की समझ कमजोर हो सकती है। यह दीर्घकालिक शिक्षा और भविष्य की चुनौतियों के लिए हानिकारक हो सकता है।

मानसिक दबाव और तनाव: सिर्फ प्रतियोगी परीक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करने से छात्रों पर अत्यधिक मानसिक दबाव पड़ सकता है। यदि वे इन परीक्षाओं में सफल नहीं होते हैं, तो यह गंभीर निराशा और अवसाद का कारण बन सकता है, क्योंकि उनका पूरा ध्यान केवल एक ही लक्ष्य पर केंद्रित होता है।

नैतिक मूल्यों का हनन: डमी स्कूलों की प्रथा अक्सर शिक्षा प्रणाली के नियमों और नैतिक मूल्यों का उल्लंघन करती है। यह छात्रों को यह संदेश दे सकता है कि नियमों को तोड़ा जा सकता है, जो उनके नैतिक विकास के लिए अच्छा नहीं है।

शिक्षा प्रणाली का दुरुपयोग: डमी स्कूल शिक्षा बोर्डों द्वारा निर्धारित उपस्थिति नियमों का उल्लंघन करते हैं। यह शिक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता और उसकी मूल भावना को कमजोर करता है।

शिक्षण गुणवत्ता पर प्रभाव: जब छात्र नियमित रूप से स्कूल नहीं जाते हैं, तो स्कूलों की शिक्षण गुणवत्ता पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि उनका प्राथमिक कार्य छात्रों को पढ़ाना है।

अनैतिक व्यापारिक मॉडल: कई डमी स्कूल और कोचिंग सेंटर मिलकर एक अनैतिक व्यापारिक मॉडल चलाते हैं, जहां छात्रों को स्कूल न जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे केवल उनके वित्तीय हित पूरे होते हैं।

सकारात्मक प्रभाव :–

प्रतियोगी परीक्षाओं पर अधिक ध्यान: डमी स्कूलों का मुख्य आकर्षण यह है कि वे छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं (जैसे JEE, NEET) की तैयारी के लिए अधिक समय और लचीलापन प्रदान करते हैं। स्कूल न जाने से उनका समय बचता है, जिसका उपयोग वे कोचिंग कक्षाओं और स्व-अध्ययन में कर सकते हैं।

'अनावश्यक' गतिविधियां: कुछ छात्रों और अभिभावकों का मानना है कि नियमित स्कूल में अनावश्यक गतिविधियों (जैसे खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम) पर समय बर्बाद होता है, जो प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के लिए महत्वपूर्ण समय खा जाता है। डमी स्कूल इस "बर्बाद" समय को बचाते हैं।

निष्कर्ष:– कुल मिलाकर, डमी स्कूल औपचारिक शिक्षा के लिए विनाशकारी हैं। जबकि वे कुछ छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर दे सकते हैं, वे छात्रों के समग्र विकास, सामाजिक कौशल और आधारभूत ज्ञान के लिए गंभीर खतरा पैदा करते हैं। सीबीएसई (CBSE) और शिक्षा मंत्रालय जैसी संस्थाएं डमी स्कूलों के खिलाफ सख्त कदम उठा रही हैं, जिसमें 2025-26 से बोर्ड परीक्षाओं में शामिल होने के लिए नियमित स्कूल उपस्थिति को अनिवार्य करना शामिल है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि शिक्षा प्रणाली छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए औपचारिक स्कूली शिक्षा के महत्व को मानती है और डमी स्कूलों की प्रथा को रोकना चाहती है।

भविष्य में, नियमित स्कूली शिक्षा पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए, ताकि छात्र केवल परीक्षा-केंद्रित न रहें, बल्कि एक संतुलित और पूर्ण शैक्षिक अनुभव प्राप्त कर सकें।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

राशिफल शनिवार 24 मई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, रेवती नक्षत्र दिन 1:48 तक, आयुष्मान योग दिन 3:00 तक, कौलव करण प्रात: 8:55 तक, चन्द्रमा दिन 1:48 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मेष, मंगल-कर्क, बुध-वृष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज शनि प्रदोष व्रत, मधुसुदन द्वादशी है। पंचक दिन 1:48 पर समाप्त होंगे। आज से वट सावित्री व्रत तीन दिन का आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:20 से 9:01 तक, चर 12:23 से 2:04 तक, लाभ अमृत 2:04 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:39, सूर्यास्त 7:08

मेष
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

धनु
परिजनों के व्यवहार के कारण मन व्यथित हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक सुविधाओं में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

तुला
व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में चल रहे मतभेद दूर होंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

वृश्चिक
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बीकानेर के करणी माता मंदिर में दर्शन कर परंपरा निभाई

पहले युद्ध जीतकर राजा आते थे, अब ऑपरेशन सिंदूर के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आए, ऐसा पहली बार है, जब देश का कोई प्रधानमंत्री करणी माता मंदिर में पहुंचा हो

बीकानेर, (निसं)। ऑपरेशन सिंदूर के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहली बार बीकानेर आए। जिला मुख्यालय से 22 किमी दूर देशनोक के विश्वप्रसिद्ध करणी माता मंदिर में पीएम ने विशेष पूजा-अर्चना की। ऐसा पहली बार है, जब देश का कोई प्रधानमंत्री इस मंदिर में पहुंचा हो।

■ **पीएम नरेंद्र मोदी गुरुवार सुबह 10.35 बजे मंदिर पहुंचे थे, गर्भगृह में करीब दस मिनट रुके, उन्होंने मंदिर में शीश झुकाते हुए पूजा-अर्चना की**

इतिहासकारों का कहना है कि पीएम नरेंद्र मोदी ने ऑपरेशन सिंदूर के बाद इस मंदिर में धोक लगाई। ऐसी मान्यता रही है कि बीकानेर रियासत में जब भी कोई राजा या नरेश युद्ध में सफल होता था, मां करणी के दरबार में आशीर्वाद लेने जरूर पहुंचता था। 15वीं शताब्दी में नरेश राव बीका नए राज्य को बसाने की दृष्टि से जोधपुर से देशनोक पहुंचे थे। उनके देशनोक पहुंचने का कारण यह था कि जोधपुर की कुलदेवी मां करणी माता यहां सशरीर विराजमान थी। मां करणी को दुर्गा का अवतार माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि देशनोक पहुंचने पर मां करणी ने राव बीका को यह आशीर्वाद दिया था कि मैं तुम्हारा नया राज्य बसाऊंगी। जो तुम्हारे पिता राव जोधा से सवाया यानी उनसे भी बड़ा होगा। राव बीका ने अपना कैंप देशनोक में किया और मां करणी के आशीर्वाद से सारी कार्ययोजना बनाई थी। राव बीका ने विक्रम संवत 1545 में बीकानेर राज्य की स्थापना की थी।

मां करणी बीकानेर की कुलदेवी बनी थी। कालांतर में महाराजा गंगासिंह ने देशनोक में करणी माता का भव्य मंदिर बनवाया था। इसी के साथ ही यहां एक परंपरा भी चली थी। बीकानेर के जितने भी नरेश हुए, वे किसी भी महत्वपूर्ण कार्य या युद्ध पर जाने से पहले मां करणी के दर्शन करने आते थे। ऐसी मान्यता है कि मां करणी के आशीर्वाद के बाद ही किसी कार्य की शुरुआत करते थे। कार्य पूरा होने पर वापस मां करणी के दरबार में धोक लगाते थे।

इतिहासकार डॉ. शिव कुमार भनोत का मानना है कि पीएम मोदी ने ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद देशनोक मंदिर में धोक लगाई। पहले भी यहां के राजा युद्ध में जीतने पर ऐसा करते थे। मोदी ने मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना की। देश की नाक यानी देशनोक से ही देशभर के रेलवे स्टेशनों का लोकार्पण और शिलान्यास एक साथ किया।

करणी माता मंदिर के ट्रस्टी अशोक चारण ने बताया कि करणी मां के मंदिर में बीकानेर राज्य के समय तो हर राजा किसी भी मिशन की सफलता के बाद आता था। मगर आजाद भारत के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि आतंक के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद पीएम मोदी ने मां करणी के दरबार में आशीर्वाद लिया है। करणी माता मंदिर का निर्माण 20वीं शताब्दी की शुरुआत में बीकानेर के महाराजा गंगासिंह ने करवाया था। मंदिर की पूरी संरचना संगमरमर से बनी है और इसकी वास्तुकला मुगल शैली से मिलती जुलती है।

बीकानेर की करणी माता की मूर्ति मंदिर के अंदर गर्भगृह के भीतर विराजमान हैं, जिसमें वह एक हाथ में त्रिशूल धारण किए हुए हैं। देवी की मूर्ति के साथ उनकी बहनों की मूर्ति भी दोनों तरफ है। इतिहासकार डॉ. शिव कुमार भनोत ने बताया कि देशनोक का नामकरण भी ऐतिहासिक है। यह बीकानेर राजघराने की कुलदेवी का स्थान तो था ही, लेकिन इसे देश की नाक भी कहा जाता रहा है। चूहों के मंदिर के नाम से यह पूरे विश्व में प्रख्यात है और यहां दुनियाभर से लोग आते हैं। यह धार्मिक पर्यटन का3 बड़ा केंद्र है।

पीएम नरेंद्र मोदी गुरुवार सुबह 10.35 बजे मंदिर पहुंचे थे। गर्भगृह में करीब दस मिनट रुके थे। इस दौरान उन्होंने मंदिर में शीश झुकाते हुए पूजा-अर्चना की थी। मंदिर में पीएम की ओर से विशेष भोग भी चढ़ाया गया था। यह भोग मंदिर में ही बनाया जाता है। यजमान की ओर से भोग के प्रसाद का भुगतान किया जाता है। इसके बाद मंदिर कमेटी ने करणी माता की चांदी की मूर्ति पीएम को भेंट की थी।